IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

डॉ. जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन वर्तमान प्रासंगिकता: एक अध्ययन

घेवाराम
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
प्रो.(डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

सारांश :–

डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचार इतर शिक्षा शास्त्रियों के सदृश्य चिंतन और मनन के परिणाम नहीं है। उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन का निर्माण भावनाओं के प्राबल्य तथा कल्पना लोक के वितरण में नहीं किया है अपितु विचार और प्रयोगए चिंतन और क्रिया तथा ज्ञान और कम में परस्पर समन्वय ओर सह-संबंध की स्थापना करके किया वस्तुत: डॉ. जाकिर हुसैन का जीवन ही स्वयं में शिक्षा शास्त्र की एक अनुपमेय रचना है। जीवन के विभिन्न अवसरों और घटनाओं के अनुभूत परिस्थितियों से अंतर्दशन और आत्म पर्यवेक्षक के परिणाम स्वरूप जो विचार प्रसूत हुए हैं उनसे ही जाकिर हुसैन के शैक्षणिक विचार सुदृढ़ए सुनियोजित सुव्यवस्थित एवं परिपुष्ट होकर व्यवहारिक शिक्षा दर्शन के रूप में उभर पाए है।

डॉ. जाकिर हुसैन का कथन है **"एक कालाहारी ऐसी भी हैं जो मशीनी नहीं होती, स्वयं की योग्यता के आधार पर नया अधिकार पैदा करने से उत्पन्न होती हैं, इसको अर्जित या पैदा हुए कलाकारी कह सकते हैं।"** परंपरागत सूचनार्थ विद्या होती हैं और प्रकाश रहित इससे न तो मस्तिष्क को प्रकाश प्राप्त होता है और न आत्मा बढ़ती है। प्रायः स्वार्थ के अवगुण पाने हेतु एक सुंदर परदा है या एक खाली बर्तन पर चढ़ा हुआ चायए जो आवाज बहुत देता है पर अंदर से होता है खोखला अनुभव से प्राप्त की भी विद्या विनय नम्रता और सम्मान पैदा करती है।

जाकिर हुसैन ने शिक्षित व्यक्ति के पांच लक्षण बताए थे जो निम्नानुसार है:-

1. वस्तुओं और व्यक्तियों में संबंध मूल्य के प्रति शिक्षित व्यक्ति का बौद्धिक क्षितिज विस्तृत होता है, उसकी आंखों पर पर्दा नहीं होता।

2. वह जीवन मुक्त विचारों वाला व्यक्ति होता हैए और नए मूल्यों और विचारों को ग्रहण कर सकता है, वह जड़ वादी नहीं संस्कृति से बेरुख नहीं।

3. नैतिक विकास की दिशा में उसे अंत प्रेरणा होती हैं और स्वयं में तथा अपने चारों ओर की दुनिया में वह पूर्णता की और निरंतर बढ़ता चलता है

4. वस्तुओं के मूल्यों.संबंधों के प्रति उसका रवैया नम्र तथा बहुग्रही है, रूढ़िवादियों या नौकरशाही वाले सख्त तथा कठोर रवैय जैसा नहीं व लकीर का फकीर नही ।

5. चूंकि उसका मूल्य.संबंधी अनुमानए बिल्कुल निरपेक्ष मूल्यांकन के आधार पर होता है वह। इस बात का स्पष्ट प्रमाण देता है कि उसने केंद्रीय मानसिक प्रकाश हैं, जो उसके सारे कार्यों विचारों तथा भावनाओं को प्रकाशित कर देता हैा वह अंदर से खोखला तथा दूसरों के कार्य में टांग उड़ाने वाला व्यक्ति नहीं है।

जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन के प्रमुख सिद्धांत:-

1. समग्र विकास :-

डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा में समग्र विकास पर आधारित शिक्षा पर जोर दिया है। केवल अकादमिक ज्ञान नहींए बल्कि शारीरिकए नैतिक ओर सामाजिक विकास पर जोर, उनका मानना था कि एक छात्र चार मुख्य आयामो में विकसित होना चाहिए। बौद्धिक विकास में तर्क, विश्लेषण और विज्ञान आधारित सोच को बढ़ावा देना। शारीरिक विकास में खेलए योग और व्यायाम के माध्यम से शरीर को स्वस्थ रखना, नैतिक.आध्यात्मिक विकास में सत्य, अहिंसाए सहिष्णुता जैसे मूल्यों को जीवन में उतारना। सामाजिक.सांस्कृतिक विकास में समूह कार्य स्थानीय कला.संगीत और विविधता में सहभागिता में सामाजिक जिम्मेदारी सीखना।

2. शिक्षा का लोकतंत्रीकरण :-

डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने के कई ठोस सुझाव दिए है जो आज भी बहुत प्रासंगिक है। किसी भी सामाजिक आर्थिक वर्ग का होए हर छात्र को स्कूल.कॉलेज में दाखिले का समान अधिकार होना चाहिए। उन्होंने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए वजीफा और छात्रवृत्ति की व्यवस्था की बात कही, मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शुरुआती पढ़ाई होनी चाहिए ताकि ज्ञान बाधा ना बने, यही विचार अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा समानता के रूप में देखा जा सकता है। सरकारी स्कूलों को पर्याप्त संसाधन और योग्य शिक्षक मिलेए साथ ही निजी.सार्वजनिक साझेदारी के माध्यम से अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान की जाए, इससे सभी वर्गों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सकेगी शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और शैक्षणिक स्वायत्तता दी जानी चाहिए ताकि वे स्थानीय

जरूरत के अनुसार पाठ्यक्रम को अनुकूलित कर सके यह लोकतंत्रीकरण का मूल स्तंभ है शिक्षा को ऊपर से थोपने के बजाय नीचे से विकसित करना। डॉ. जाकिर हुसैन ने भविष्य की शिक्षा में तकनीक के महत्व को समझा था, उन्होंने दूर.दराज क्षेत्रों में भी इंटरनेट और डिजिटल सामग्री की पहुंच सुनिश्चित करने की सलाह दी थीए जो आज के दीक्षाए स्वयं और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में परिलक्षित हो रही है।

3. गुरु शिष्य संबंध:-

डॉ. जाकिर हुसैन ने गुरु शिष्य.संबंध को सिर्फ ज्ञान.प्रसारण की प्रक्रिया नहींए बल्कि एक गहरी.पारस्परिक बंधन के रूप में देखा। उनका मानना था कि शिक्षक केवल सूचना देने वाला नहीं, बल्कि शिष्य के समग्र विकास का मार्गदर्शनए प्रेरक और कभी-कभी मित्र होता है, गुरु.शिष्य को उसकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा देता हैए न कि एक सम्मान पाठ्यक्रम थोपता है। प्रत्येक छात्र की अलग-अलग जरुरतों को समझ कर शिक्षक व्यक्तिगत समर्थन प्रदान करता हैए जिससे आत्मविश्वास बढ़ता हैं। ज्ञान के साथ नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और जीवन कौशल भी सिखाए जाते हैं। गुरु.शिष्य के चरित्र.निर्माण भूमिका निभाता है। गुरु शिष्य के बीच खुला संवाद और परस्पर सम्मान होना चाहिएए जिससे सीखने की प्रक्रिया दो तरफ बनती है।

4. विज्ञान.आधुनिकता:-

डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा में विज्ञान और आधुनिकता को दो प्रमुख स्तंभ माना था। उनका मानना था कि केवल पुस्तक ज्ञान से नहींए बल्कि प्रयोग आधारित तर्क संगत सोच से ही छात्र भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकते हैं, कक्षा में प्रयोगशालाए प्रोजेक्ट.वर्क और फील्ड.ड्रिप को अनिवार्य किया जाएए ताकि छात्र सिद्धांत को प्रत्यक्ष देख सके। सांख्यिकी और डेटा विश्लेषण को पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्रों को साक्ष्य परक सोच सिखाई जाए। वास्तविक सामाजिक.आर्थिक समस्याओं ;जैसे जल संरक्षणए ऊर्जा दक्षताद्ध को केस.स्टडी बनाकर समाधान खोजने की प्रैक्टिस की जाए। कंप्यूटरए इंटरनेट और शैक्षिक एप्लीकेशन को रोजमर्रा की पढ़ाई में बिठाया जाएए जिससे सूचना तक पहुंच तेज एवं समान हों। विज्ञान को मानविकी, सामाजिक विज्ञान और कला के साथ जोड़कर **"स्टेम-प्लस"** मॉडल अपनाया जाएए जिससे नवाचारों की सीमा विस्तृत हो, लीडरशिप, उद्यमिता और जीवन कौशल को पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्रों को बदलती नौकरी.मार्केट के लिए तैयार किया जाए।

5. स्थानीय संस्कृति का सम्मान:-

डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा को सिर्फ वैश्विक ज्ञान का भंडार नहींए बल्कि स्थानीय संस्कृति की धरोहर से जोड़ने की बात कही थी। उनका मानना था कि जब सीखने का माहौल छात्रों की रोजमर्रा की जिंदगी, भाषा कला और परंपराओं से जुड़ता हैए तो ज्ञान अधिक सार्थक और प्रभावी बनता हैए शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय बोली में होनी चाहिएए ताकि बच्चे अवधारणाओं को आसानी से समझ सके। पाठ्यक्रम में क्षेत्रीय इतिहासए लोकगीतए शिल्प और त्योहारों को शामिल किया जाए। इसमें पहचान बोध मजबूत होता है, स्कूल.समुदाय के सहयोग से प्रोजेक्ट.वर्कए खेती.बाड़ी हस्तशिल्प आदि को पाठ्यक्रम में जगह दीए जाए जिससे शिक्षा जीवन के साथ जुड़ती है। शिक्षकों को स्थानीय रिवाजों का आदर करना और उन्हें कक्षा में सम्मानित करना चाहिएए इससे छात्रों को मूल्य. संकल्पना में सहजता मिलती है। कई राज्यों में स्थानीय भाषा में पाठ्य पुस्तकेए सांस्कृतिक कार्यशालाएं और **"गुरु-शिष्य मॉडल"** के तहत समुदाय.सेवा कार्यक्रम चल रहे हैं।

निष्कर्ष:.

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" में विज्ञान आधारितए प्रायोगिक और डिजिटल शिक्षा पर जोर देकर जाकिर हुसैन के विचारों की आधुनिक परछाई है। डॉ. जाकिर हुसैन के विचार.समग्रताए समानता, शिक्षक.शिष्य की घनिष्ठता, विज्ञान.आधारित और स्थानीय सांस्कृतिक आज के शैक्षिक सुधारो में गूंजते हैं। आज की शिक्षा श्ज्ञान. कुशलता. मूल्य. स्वास्थ्य को जोड़कर एक संतुलित व्यक्तिव को बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। शिक्षा को केवल एक वर्ग या समूह तक सीमित न रखकरए सभी के लिए समान, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण बनाना। स्कूल.कॉलेज में यह विचार मैटरशिप प्रोग्रामए ट्यूटरियल क्लास और छात्र. केंद्रित शिक्षण विधियों में दिखाई देता है। यदि आप किसी विशेष से पहलू जैसे मेंटरशिप मॉडल या शिक्षक प्रशिक्षण पर और गहराई से बात करना चाहते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विज्ञान आधारित प्रायोगिक और डिजिटल शिक्षा पर जोर देकर डॉत्र जाकिर हुसैन के विचारों को आधुनिक को परछाई है।

संदर्भ ग्रन्थ:-

1 जे.पी.(2001): महान दार्शनिकों और विचारों की शिक्षा दिल्ली शिप्रा प्रकाशन

2 आचार्य श्री राम (2008): डॉ जाकिर हुसैन मथुरा युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि

3 दुबे सत्यनारायण (2000द्धरू शिक्षा की नवीन दर्शनीय प्रश्नों में आगरा आगरा पुस्तकमंदिर

4 www.shodhganga.org